इस पॉडकास्ट में आपको मानवता की सच्ची मिसाल की झलक मिलती है। कैसे इस धरती के सबसे बड़े आध्यात्मिक संत ने अपने श्रेष्ठ दर्जे को संभाला और किस तरह उन लोगों को भी संभाला, जो कभी उनके चरणों से आगे नहीं पहुंच पाए।

सादा जीवन, उच्च विचार

मैं आपसे एक सवाल पूछता हूं : यदि लाखों लोग किसी इंसान की पूजा करते हों और श्रद्धा से उनके सामने सर झुकाते हों, तो उस इंसान के लिए विनम्र बने रहना कितना आसान होगा?

जिन लोगों के पास किसी भी तरह की ताकत होती है, वो आमतौर पर अपने गुरूर और अहम को काबू नहीं कर पाते। तो फिर गुरुदेव ने यह कैसे कर लिया था?

आइए कुछ लोगों को सुनते हैं, जिन्हें पता है कि गुरुदेव इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि कैसे एक महान इंसान एक साधारण व्यक्ति बना रह सकता है।

आइए उनके दफ्तर के एक सीनियर व्यक्ति से चर्चा करते हैं, जिन्होंने तन, मन और आत्मा से खुद को महागुरु को समर्पित कर दिया था। बात करते हैं शंकर नारायण जी से, जिन्हें गुरुदेव प्यार से डॉक्टर बुलाया करते थे।

सवाल : डॉ शंकर नारायण मेरे जेहन में यह सवाल आता है कि आप ऑफिस में गुरुजी के सीनियर थे और जब आप उनसे मिले, तो वो बड़े सीधे-सादे कपड़ों में थे। फिर भी आप उनसे बेहद प्रभावित थे। मैं यह नहीं समझ पाया?

डॉ.शंकर नारायण जी : आप इसे नहीं समझ पाते हैं, यही इसकी खूबसूरती है। इसकी खूबसूरती यह है कि गुरुजी उस हद तक सादगी भरे थे। मैं उसी बात से ही प्रभावित था।

हम इस चर्चा को सुरेश प्रभु के साथ आगे बढ़ाते हैं। सुरेश प्रभु भारत और विदेशों में एक जाने-माने राजनेता रूप में मशहूर हैं। हालांकि उनके बारे में बहुत-से लोग यह नहीं जानते कि उनका रुझान आध्यात्मिकता और दान-कार्यों की तरफ भी है।

सुरेश प्रभु जी : वो कभी किसी का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश नहीं करते थे। वो तो यह भी नहीं चाहते थे कि वो बड़े-बड़े संतों की तरह व्यवहार करें। वो बड़े सहज और सादगीपूर्ण ढंग से रहते थे। वो यह भी नहीं दिखाते थे कि वो एक ऐसे शख्स हैं, जिनसे लोगों को प्रेरित होना चाहिए। बेशक अलग-अलग तरह के गुरु होते हैं, लेकिन गुरुदेव जैसा गुरु पाने के लिए आपको बेहद खुशनसीब होना पड़ता है, जिन्होंने कभी यह दावा नहीं किया कि वे गुरु हैं और ना ही कभी किसी को अपनी शक्तियां दिखाईं। वो हमेशा अपनी शक्तियों का इस्तेमाल अपने किसी शिष्य के जरिए ही किया करते थे। तो मुझे लगता है कि हर व्यक्ति को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि उसे गुरुदेव जैसा गुरु मिले।

सुरेश प्रभु वैसे तो एक मशहूर राजनीतिक शख्सियत हैं, लेकिन उन्होंने मानवता का सबक गुरुदेव से सीखा। मैंने कई मौकों पर गुरुदेव को सुरेश से यह कहते हुए सुना कि वो एक दिन बड़े सम्मानित जन-नेता बनेंगे। उस समय इस पर यकीन करना आसान नहीं था लेकिन ऐसा जरूर हुआ और एक बड़े बोनस के साथ हुआ।

मुंबई के नितिन गाडेकर महागुरु की मानवता को कुछ इस तरह बयां करते हैं,

सवाल : आपके विचार से उनकी कौन-सी खूबी दूसरे आध्यात्मिक लोगों से अलग है?

नितिन जी : बहुत-सी बातें हैं जैसे कि सबसे पहले तो वो हर दिन ऑफिस जाते थे। हमारे देश में बहुत-से आध्यात्मिक गुरु है, मैं उनकी आलोचना नहीं कर रहा हूं लेकिन वे लोग आश्रम में बैठते हैं। हालांकि गुरुदेव का कोई आश्रम नहीं था। वो तो अपने घर में बैठते थे। अधिकांश लोग भगवा वस्त्र धारण कर लेते हैं, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। उन्होंने माला तक नहीं पहनी। वो तो ऐसे थे, जो आपके बाजू में खड़े होकर सारी दुनिया के सामने सिगरेट पीते थे। असल में वो हर तरह से यह दिखाने की कोशिश करते थे कि वो गुरु नहीं हैं।

सवाल : तो खुद को गुरु ना दिखाने के उनके प्रयास के अलावा आपने उनके और कौन से मानवीय गुणों पर गौर किया?

नितिन जी : उनका मानवीय गुण यह था कि यदि आप एक बार उनके कमरे में बैठ गए तो आपको यह एहसास नहीं होगा कि वो आपसे बात नहीं कर रहे हैं। वो कभी लोगों को यह एहसास नहीं कराते थे कि जैसे वो उनसे बात नहीं कर रहे हैं। उन्होंने मुझे कभी बाहरी होने का एहसास नहीं कराया। कभी नहीं। कमरे में बैठे सभी लोगों को भी ऐसा ही लगता था। वो जो भी व्यवहार करते थे, उसमें बड़ी दया होती थी। उनके व्यवहार से आपको वो करुणा महसूस होती थी और आपको कभी अजनबी या बाहरी की तरह महसूस नहीं होता था और यह नहीं लगता था कि आप उनके अंदर के लोगों में से एक नहीं हैं। जब आप उनके कमरे में आ जाते थे, तो आप खुद को उनका ही मानने लगते थे। मैं बाहरी था या नहीं, मैं नहीं जानता लेकिन उनकी कृपा इतनी महान थी। मैंने अपनी जिंदगी में किसी के साथ भी इस तरह की करुणा महसूस नहीं की।

प्रताप सिंह दफ्तर में गुरुदेव से सीनियर थे। वो एक नास्तिक सिख थे, जो धर्म को नहीं मानते थे, लेकिन इसे ज़ाहिर भी नहीं करते थे। वो गुरुदेव के बॉस होने के साथ-साथ उनकी सादगी के भी कायल थे।

प्रताप जी : वो बड़े सज्जन आदमी थे। कोई भी यह नहीं कह सकता था कि उनके पास बड़ी शक्तियां थीं। वो बड़े सादगी पसंद इंसान थे। मतलब भगवान से डरने वाले इंसान। उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। यदि कोई उनसे कहता कि उनकी बेटी की शादी हो रही है तो वो अपने शिष्यों से कहते कि उस आदमी को सोफा, टीवी, अलमारी आदि भेजकर उसकी मदद करें।

प्रताप सिंह जी गुरुदेव की सादगी के गवाह हैं। वो याद करते हैं कि जब गुरुदेव से नीचे के ओहदे वाले कर्मचारी अपनी बेटियों की शादी के समय उनसे मिलते थे, तो गुरुदेव अपने शिष्यों से नवविवाहित जोड़ी को उपहार भेजने को कहते थे। वो सबकी बहुत मदद करते थे।

एफसी शर्मा जी गुरुदेव की मानवता और उनके आदर्शों का एक और उदाहरण पेश करते हैं,

एफ सी शर्मा जी : जब भी गुरुजी अपने सीनियर के ऑफिस में आते थे तो वो दरवाजे पर खड़े होकर अंदर आने की अनुमति मांगते थे। ऑफिस में अंदर आने के बाद भी वो अपने सीनियर

को 'सर' कहकर ही बुलाते थे। उनके सीनियर उनके सामने माथा टेकते थे और उनसे आशीर्वाद लेते थे, लेकिन गुरुजी तो अपने फॉर्म में ही रहते थे। वो कहते थे, "नहीं, यह ऑफिस है। आप मेरे सामने क्यों झुक रहे हैं? ऑफिस को ऑफिस ही रहने दें। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप माथा टेकें या मेरा आशीर्वाद लें।"

आनंद पराशर गुरुदेव की टीम के एक जूनियर सदस्य थे, जो कई शिविरों में उनके साथ जाते थे। टीम के बाकी सदस्यों की तरह वो भी गुरुदेव के अनुयायी बन गए और फिर उनका यह साथ उन्हें शिविर से स्थान तक ले आया।

आनंद जी : मैं आपको एक किस्सा बताता हूं। गुरुजी को कहीं से पता चल गया था कि आनंद प्रकाश बैंगन नहीं खाता। मैंने बैंगन खाना छोड़ दिया था, क्योंकि एक बार इसमें कीड़ा निकल आया था, लेकिन संयोग से या पता नहीं कैसे, उन्हें इस बारे में पता चल गया। मुझे याद है हमारा टूर कश्मीर में था। उन्होंने मोहन को बुलाया, जो कैंप में हमारे साथ था। उन्होंने कहा, "बाजार से कुछ अच्छे वाले बैंगन लेकर आ जाओ।" उन्होंने कढ़ाही चढ़ाई और खुद बैंगन के पकौड़े बनाए और इसे चखने के लिए मुझे बुलाया। उन्होंने मुझसे कहा कि जरा चखकर बताना इसमें नमक वगैरह ठीक है कि नहीं। मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या कहूं। मैं तो हैरान था। उन्होंने मुझे बैंगन खिलाए, जो मैं खाना छोड़ चुका था और इस तरह बैंगन ना खाने की मेरी आदत भी खत्म कर दी। मेरे कहने का मतलब यह है कि उनका तरीका बड़ा अलग था।

इस कहानी का सबक बैंगन नहीं है, बल्कि एक मिसाल है जो गुरुदेव ने पेश की। वो यह है कि उन्होंने अपने समय की कीमत पर अपने एक जूनियर के लिए खाना पकाया।

गुरुदेव अपने शिष्यों, अपनी टीम के सदस्यों और कैंप में आने वाले अपने बच्चों के लिए अक्सर खाना बनाया करते थे। मैं तो यह सोचता हूं कि क्या कभी किसी ने उन्हें यह बताने की ज़हमत नहीं उठाई कि वो एक महागुरु है और संभवतः इस धरती के सबसे शक्तिशाली आदमी!

गुरुदेव की सबसे छोटी बेटी अल्का अपनी यादों के गुलदस्ते से एक अनमोल फूल चुनकर लाती हैं,

अल्का जी : घर पर ऐसा नहीं था कि गुरुजी को अच्छा खाना ही चाहिए होता था। घर पर जो भी बना होता था, डैडी उसे खा लेते थे। इंदु दीदी हमें बताती थी कि ऐसे मौके भी आए, जब गुरुजी सबसे आखिरी में खाना खाते थे, जब सब लोग खा चुके होते थे। एक बार हम लोग शहर से बाहर गए थे, शायद हरिआना गए थे। घर में जो खाना बना था, वो खत्म हो गया था। रात में बस थोड़ा-सा खाना बचा था। गुरुदेव ने कहा, "ला बेटा, मुझे खाना दे दे।" तो इंदु दीदी ने उनसे कहा कि वो और खाना बना लेती हैं क्योंकि बहुत कम खाना बचा है। गुरुजी ने उनसे कहा, "नहीं जो भी है, वही दे दे।" तो उन्होंने एक रोटी पर कुछ आलू रखे और फिर बाकी की रोटी कढ़ाही में बचे मसाले में लपेटकर खाई।

एक पुरानी कहावत है, "राम से बढ़के, राम का नाम।" लेकिन यहां एक ऐसे शख्स की बात हो रही है, जिन्होंने इस कहावत को बदलकर यह कर दिया - "राम के नाम से बढ़के, राम का काम"।

कई प्रभावशाली इंसान अपनी छवि में बंधकर रह जाते हैं, लेकिन गुरुदेव कभी उस छवि में नहीं जिए, जो उनके लिए लोगों ने बनाई थी।

गिरी लालवानी काफ़ी शरारती थे, लेकिन उससे कहीं ज्यादा वफादार भी थे, जिन्होंने अपनी उम्र के 20वें दशक के शुरुआती वर्षों में अपना ज्यादातर वक्त गुरुदेव के साथ बिताया था।

गिरी लालवानी जी : वो बड़े साफ-सुथरे और सादगीपूर्ण ढंग से रहते थे और कभी किसी बात की फिक्र नहीं करते थे। वो फार्म हाउस में बैठकर खेती करना और ऐसी बहुत-सी चीजें करना पसंद करते थे। आप जानते हैं यह कितना मुश्किल है, कितनी धूल, गोबर आदि सभी चीजें होती हैं। उन्हें यह सब करने की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन फिर भी वो इसे करते रहते थे। यदि मैं उनकी जगह होता, तो मैंने यह सब नहीं किया होता। मैंने किसी भी इंसान में इतनी सादगी कभी नहीं देखी। एक बार मैं उनके साथ उनके ऑफिस गया था। उन्हें कभी यह पसंद नहीं था कि वहां उनके सहकर्मी और ऑफिस के सभी लोग उनके पैर छुएं। एक दिन मैं और वो उनके ऑफिस में से गुजर रहे थे, तभी दो लोग उनके पास आए और उनकी पीठ थपथपाते हुए कहा, "यार तू तो बड़ा गुरु बन गया है। हमारा काम करेगा या नहीं?" मैं तो उन दोनों के व्यवहार से बहुत नाराज हो गया, लेकिन गुरुदेव ने मुझे शांत करा दिया। अगले दिन वो मुझे फिर से ऑफिस में ले गए और वही दोनों कलीग्स उनके पास आए और उनसे कहा, "तू तो सचमुच का

गुरु है यार। हमारा काम तो हो गया।" मुझे नहीं पता कि वो कौन-सा काम कराना चाहते थे, लेकिन वो काम हो चुका था।

सवाल : एक रात में ही?

गिरी लालवानी जी : हां एक रात में ही। वो हर चीज ऐसे ही सीधे-सादे तरीके से करते थे। मैंने उनका ऑफिस देखा है, जिसे वो बहुत-से लोगों के साथ बांटते थे। उनका अलग से कोई ऑफिस नहीं था। वो लकड़ी की कुर्सी-टेबल पर बैठते थे, जिस तरह से सरकारी दफ्तरों में होता है।

सवाल : तो उनको इन सब बातों की कोई परवाह नहीं थी?

गिरी लालवानी जी : जी बिल्कुल नहीं। वो फिएट कार चलाते थे। शुरुआत में वो साइकिल पर चलते थे, फिर उन्होंने एक स्कूटर खरीदी जिस पर सवार होकर वो ऑफिस से घर जाते थे, और फिर उन्होंने कार खरीदी। हालांकि उनके शिष्य उन्हें रोल्स रॉयस या मर्सिडीज़ या कोई भी बड़ी गाड़ी दिला सकते थे, लेकिन गुरुजी ने कभी किसी से कुछ नहीं लिया। वो एक बहुत छोटे से घर में रहते थे, कभी कोई बड़ी कोठी या बंगला नहीं था। वो गुड़गांव के एक पुराने सेक्टर में रहते थे, जहां उन्होंने अपनी सारी जिंदगी गुजारी।

गुरुदेव ने यह साबित किया कि एक अच्छे कारसाज़ को किसी महंगे कारखाने की जरूरत नहीं! जो शख्स अपनी जीवात्मा के स्तर पर ही अरबपति हो, उसे भला संसार के सुख-साधनों या धन-दौलत की क्या इच्छा हो सकती थी!

गिरी लालवानी आगे बताते हैं,

गिरी लालवानी जी : मैं गुरुदेव के साथ उनके बेडरूम में बैठा हुआ था। उन्होंने मुझसे पूछा, "बेटा, तुम्हें कोई गाड़ी बाहर दिख रही है?" मैं बाहर गया और देखा वहां कोई कार नहीं थी। मैंने अंदर आकर उन्हें बताया कि बाहर कोई गाड़ी नहीं है। वो अपने घर से बाहर आए और उन्होंने एक स्कूटर देखी। उन्होंने घर से स्कूटर की चाबी ली और मुझसे कहा, "आओ, हम स्कूटर से ही चलेंगे।" यह बड़े कमाल की बात थी। कितनी सादगी है। वो गुड़गांव से अपने किसी शिष्य को बुलवा सकते थे, जो उनके घर से केवल एक-डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर ही रहते थे। वो बहुत

सारी गाड़ियां ला सकते थे, लेकिन फिर भी उन्होंने ऐसा नहीं किया और हम दोनों स्कूटर पर बैठकर गए।

शिव के स्वरूप होने के नाते वो तो पहले ही राजाओं के राजा थे, चाहे वो फिएट चलाएं या फिर अपने चेतक स्कूटर पर सवार होकर काम पर जाएं। उनके साथ एक मिनट से भी कम समय गुजारने के लिए अमीर से अमीर और ताकतवर से ताकतवर लोग घंटों तक इंतजार करते थे। यह गुरुदेव की शख्सियत ही थी, जो उन्हें शोहरत पाने की चाहत या लोगों का ध्यान आकर्षित करने की जरूरत से कहीं आगे ले गई।

बिट्टू जी एक ऐसे इंसान हैं, जो एक खतरनाक बीमारी से ठीक किए जाने के बाद उनकी मौजूदगी में ही बड़े हुए।

सवाल : आप उनकी जिंदगी के बारे में क्या सोचते हैं, एक गुरु के रूप में नहीं बल्कि एक आम इंसान के रूप में?

बिट्टू जी : एक साधारण मानव के रूप में वो सर्वश्रेष्ठ इंसान थे।

सवाल : क्या वो एक गंभीर आदमी थे, जो बहुत सतर्क होकर से बोलते थे या फिर उनका कुछ अलग स्वभाव था?

बिट्टू जी : जी नहीं, वो ज़रा भी गंभीर नहीं रहते थे। उदाहरण के तौर पर हमारे बचपन में वो हमारे साथ बच्चों की तरह रहते थे। वो कभी यह नहीं जताते थे कि वो बहुत बड़े गुरु हैं या उनके बहुत सारे अनुयायी हैं। वो इंसान के ओहदे के हिसाब से उससे बात करते थे। वो बड़े खुशमिजाज इंसान थे।

(खुशमिजाज मतलब?)

बिट्टू जी : खुशमिजाज मतलब वो हर वक्त खुश रहते थे।

सवाल : क्या कोई इंसान जो हर वक्त दूसरों की समस्याएं सुनता हो, वो खुश रह सकता है?

बिट्टू जी : वो एक गुरु थे। मैं और आप खुश नहीं रह सकते, लेकिन वो तो एक गुरु हैं। एक आम व्यक्ति खुश नहीं रह पाता, क्योंकि उसकी समस्याएं तो अनंत है। लेकिन एक गुरु तो दूसरों की मुश्किलें अपना लेता है।

गुरुदेव की जिंदगी की कई कहानियों में एक कहानी का शीर्षक 'कार पे कार' हो सकता है। और गिरी जी इसे पूरी रफ्तार के साथ बताते हैं,

गिरी लालवानी जी : मैं गुड़गांव में उनके घर सेक्टर 7 में ठहरा हुआ था। वहां फ्रांस का कोई व्यक्ति आया, जो एक हिंदू पंजाबी था। वो बड़ा सुंदर लड़का था। इस आदमी के पास उस समय बीएमडब्ल्यू कार थी। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि इस दुनिया में बीएमडब्ल्यू नाम की कोई कार होती है। उस समय उसने वो कार खरीदी, जो मैंने अपने जीवन में पहली बार देखी थी। उन्होंने आकर मुझसे पूछा, "गुरुजी कहां हैं?" मैंने कहा कि वो अंदर बैठे हैं। वो लड़का कमरे के अंदर गया और मैं भी वहां था। उन्होंने गुरुदेव को प्रणाम किया और उनसे कहा "गुरुजी, मैंने आपके लिए एक कार खरीदी है।" गुरुदेव ने जवाब दिया "वाह बेटा, बहुत अच्छा", जैसा वो हमेशा कहा करते थे। फिर उन्होंने कहा, "कृपया मुझे दिखाएं कि वो कार कहां है।" फिर हम तीनों कार देखने बाहर आए। वो एक खूबसूरत कार थी। तब गुरुदेव ने उस आदमी से कहा "बेटा, मैं आपकी कार में बैठूंगा।" गुरुजी ने उसे दो दिन वहीं रहने दिया। दो दिनों के बाद, गुरुजी ने उससे कहा, "बेटा, मुझे इस कार में सवारी के लिए ले चलो।" तो, हम सब स्थान के चारों ओर घूमने गए और फिर गुरुदेव हमें अंदर ले गए। गुरुदेव ने उस लड़के से पूछा "बेटा, यह गाड़ी मेरी है, है ना?" उसने उत्तर दिया "हां गुरुजी, यह आपकी है। मैंने इसे आपके लिए खरीदी है।" गुरुजी ने कहा, "तुमने मुझे यह दिया है, है ना? तो, अगर मैं किसी तीसरे व्यक्ति को देता हूं तो क्या यह ठीक होगा, चाहे ही मैं इसे गिरी को दे दूं?" लड़के ने उत्तर दिया "हां गुरुजी, यह आपकी कार है। आप इसके साथ जो चाहें कर सकते हैं।" फिर गुरुजी ने उनसे पूछा, "बेटा, हमारा रिश्ता क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया, "गुरुजी, मैं आपका पुत्र हूं।" गुरुजी ने कहा, "तो इसका मतलब है कि मैं तुम्हारे लिए पिता हूं?" उसने कहा, "हां। आप मेरे पिता हैं।" फिर गुरुजी ने उसका हाथ पकड़कर कार की चाबी उसके हाथ में रख दी और कहा, "बेटा, यह एक पिता की तरफ से अपने बेटे को दिया गया उपहार है। इसे अपने पास रखो।" लड़के ने इसे लेने से मना कर दिया। गुरुजी ने उससे कहा, "बेटा, तुम एक पिता के उपहार को मना नहीं कर सकते। मैं तुम्हारा पिता हूं और तुम्हारा गुरु भी। और आप किसी गुरु को कभी ना नहीं कहते।"

अब बिल गेट्स जैसे लक्ष्मी-पुत्र के लिए भला मॉन्ट ब्लैंक का पेन क्या मायने रखता है! उनके लिए तो यह किसी प्लास्टिक के टुकड़े या फिर निब वाले किसी धातु के ट्यूब से ज्यादा नहीं होगा! है ना?

एक छोटे से गांव में पले-बढ़े गुरुदेव की जिंदगी बड़ी सहज थी। वो खेत पर मौजूद चारपाई पर सोकर ही सुकून पा लेते थे। वो गाय का दूध निकालते या सब्जियां तोड़ते समय अपने कपड़े गंदे करने में जरा भी नहीं हिचकिचाते थे। अपने अधिकांश शिविरों के दौरान वो किसी तंबू या बड़े छोटे-से सरकारी आवास में रहते थे। उनके लिए तो चार दिवारी, एक जमीन और एक छत ही काफी थी।

उत्तराखंड स्थित श्रीनगर में एक यात्रा के दौरान हम उनके साथ उनके कैंप में रह रहे थे, जिसमें दो कमरे, एक रसोई, एक टेंट था और शौच के लिए पास ही बहता एक सरोवर का किनारा था, जिसका इस्तेमाल करने के लिए आपको पहाड़ से नीचे उतरकर जाना पड़ता था। मेरे जैसे शहरी व्यक्ति के लिए तो यह किसी रोमांच से कम नहीं था। गुरुदेव के लिए तो उनकी आधी जिंदगी जैसे कोई रोमांच से भरा टूर था।

यदि आसान शब्दों में समझाया जाए तो आलीशान गाड़ियों की जगह ओपन एयर जीपें थीं। इसमें एयर सस्पेंशन की बजाय हवा में हिचकोले खाने का इंतजाम था। हालांकि अच्छी बात यह थी कि इन असुविधाओं ने हमें जल्द हर माहौल में ढलना सिखा दिया था।

ज़रा सफ़ी लखनवी के इस शेर की बानगी तो देखिए,

बनावट हो तो ऐसी हो के जिस से सादगी टपके
बनावट हो तो ऐसी हो के जिस से सादगी टपके
ज़ियादा हो तो असली हुस्न छुप जाता है ज़ेवर से

इसी कड़ी में राजी शर्मा एक निजी किस्सा बताते हैं,

राजी शर्मा जी : एक बार 1976 में मैंने अपना कपड़ों का व्यवसाय शुरू किया था और 1975 से गुरुजी के साथ रहने का मौका भी मिला। मैं गुरुजी के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताने के लिए हर संभव प्रयास करता था। मैं कार में बैठकर, ऑफिस के लोगों से कहता था कि मैं काम के लिए फलां जगह जा रहा हूं ताकि यदि रास्ते में कोई काम हो तो वे मुझे बता सकें। मुझे एक कढ़ाई वाले के पास जाना था और उस कार की डिक्की में कपड़ों की एक बड़ी बोरी थी। पहले के दिनों में गुरुजी लोगों के घरों में जाकर सेवा करते थे। एक जगह से दूसरी जगह पर जाने के कुछ घंटों के बाद गुरुजी ने मुझसे पूछा, "क्या कोई काम है, जो आपको करना है?" मैंने कहा "हां, मुझे कढ़ाई करने वाले के पास जाना था और कपड़ों से भरी इस बोरी को कढ़ाई के लिए देना था।" उन्होंने कहा, "ठीक है, इसे करते हैं।" मैं गाड़ी से उस जगह पर गया और गुरुजी से कहा कि मैं कुछ ही मिनट वापस आ जाऊंगा। मैं कढ़ाई वाले के घर के अंदर गया और उसे कार के बूट से बैग उठाने में मेरी मदद करने के लिए कहा। दुर्भाग्य से, मदद आने में शायद पांच-दस मिनट का समय था। इसलिए, मैंने कार के पास आकार खुद ही इस बैग को कार से बाहर निकालने का फैसला किया, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि गुरुजी इंतजार करें। यह काफी बड़ा बैग था और मुझे इसे डिक्की से बाहर निकालने में बड़ी मुश्किल हो रही थी। अचानक मैंने देखा कि यह बैग बहुत हल्का हो गया है और मैं इसे बड़ी आसानी से बाहर निकाल पा रहा हूं। जैसे ही मैं मुड़ा तो मैंने देखा कि गुरूजी बैग पकड़े हुए हैं और उसे बाहर निकालने में मेरी मदद कर रहे हैं। मैं तो बिल्कुल दंग रह गया! मैंने उनसे कई बार अनुरोध किया, लेकिन वे नहीं माने और जोर देकर कहा कि वो मेरे साथ कढ़ाई वाले के पास बैग ले जाएंगे। उन्होंने मुझसे कहा, "बेटे, अगर आप ये कर सकते हो तो मैं भी आपके साथ क्यों नहीं कर सकता।"

बिंदु लालवानी महागुरु की गोद में पली-बढ़ी हैं और ऐसे में वह कुछ ऐसी बातें याद करती हैं जो उनके ज़ेहन में गहराई तक समाई हैं।

सवाल : आप 8 साल की उम्र में गुरुदेव से मिली थी। क्या आपको लगता है उन्होंने एक आसान जिंदगी जी?

बिंदु जी : मैं कनॉट प्लेस में उनके ऑफिस के गेट के बाहर उनसे मिली थी। वो नीचे आए और हमसे वहीं मिले थे। मेरे माता-पिता ने मुझे उनका आशीर्वाद लेने के लिए कहा, जो मैंने कभी नहीं किया। मैंने ऐसा किया, लेकिन मुझे कुछ महसूस नहीं हुआ। मुझे यकीन है कि तब उस बात ने मुझे प्रभावित किया था, क्योंकि मुझे अब भी उनके साथ बिताए वो दो मिनट अच्छे से

याद हैं। वो एक साधारण आदमी की तरह मिले, जो बड़ी सादगी से बात करते थे। जब भी वो कुछ बोलते थे, तो उसमें एक प्रवाह होता था। आप इसे कैसे कहेंगे - उसमें कोई दिखावा नहीं था - कोई शक्ति का प्रदर्शन या अधिकार भाव नहीं था। वो तो दादू की तरह थे। वो दादा जी की तरह मिलनसार थे, जिनसे आप खुलकर बात कर सकते थे। एक दादा, जिनसे आप अपने माता-पिता से ज्यादा करीब होते हैं। उनसे कुछ भी छुपा नहीं था, वो हमेशा सबकुछ जानते थे।

अब आता है एक ऐसा मंज़र, जिसकी अगुवाई करने से मैंने साफ इंकार कर दिया होता। गिरी लालवानी उस बात को याद करते हैं,

गिरी जी : यह गुरुजी के फार्महाउस पर हुआ था। सर्दी का मौसम था और हम गुरुदेव के ऑफिस से सीधे उनके फार्म हाउस आ गए थे। सर्दियों में उन्हें धूप में बैठना अच्छा लगता था। गुरुदेव जूट की चारपाई पर बैठे थे और मैं नीचे बैठकर उनके पैर दबा रहा था। अचानक 5-7 मिनट के बाद एक गाय गुरुदेव की चारपाई के पास आ गई और उनसे कुछ ही मीटर दूर गाय पेशाब करने लगी। गौमूत्र की कुछ बूंदें गुरुदेव के चेहरे और शरीर पर पड़ रही थीं। तो, मैंने गुरुजी से कहा, "गुरुजी कृपया यहां से उठिए, हम थोड़ी दूर जाकर बैठेंगे।" गुरुजी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "बेटा, वो भी मेरी बच्ची है। उसे अपने माता-पिता पर पेशाब करने का अधिकार है। एक बच्चे को इतना अधिकार है।"

वे हर प्राणी के साथ समान रूप से व्यवहार करते थे और उसी तरह जिंदगी जीते थे, जैसी ग्रंथों में बताई गई है। वो उन परतों के भीतर देख सकते थे, जिनमें आत्मा लिपटी होती है, जिनसे जिंदगी को अलग-अलग रूप मिलते हैं। वैसे यह कोई साधारण सोच नहीं मानी जाएगी। यह तो उनकी उन्नत सोच की मिसाल है।

पश्चिमी दुनिया के नए आध्यात्मवादी तो उन्हें 'एलियन' घोषित कर सकते हैं। लेकिन आज मैं बहुत-से इंसानों को एलियन मानूंगा क्योंकि मैं यह नहीं समझ सकता कि वो क्या सोचते हैं, क्यों सोचते हैं और क्यों एक भ्रम में जीते हैं।

जब मुझमें सहानुभूति का भाव जागा, तो मुझे एहसास हुआ कि अनदेखी और आत्मानुभूति के अभाव में लोग भटकते रहते हैं और खुद अपना ही छोर ढूंढते रहते हैं, जबकि यह एलियन यानी गुरुदेव तो एक सीधी राह पर आगे बढ़ते रहे।

अपने जमाने में एक पहलवान रहे पहलवान जी ने दिल्ली और गुड़गांव में काफी ख्याति हासिल की थी। गुरुदेव से मिलने के बाद उनके व्यक्तित्व में एक संपूर्ण बदलाव आया। उसके बाद यह दबंग व्यक्ति एक शालीन इंसान बन गए और आगे चलकर गुरुदेव के सबसे परम भक्तों में से एक बने।

पहलवान जी ने तीन दशकों से ज्यादा समय तक गुरुदेव के फार्म और गौशाला को संभाला। गुरुदेव फार्म पर उनके और बाकी लोगों के साथ नियमित रूप से वक्त बिताते थे। आइए जानते हैं पहलवान जी का क्या कहना है,

पहलवान जी : एक बार हम फार्म पर थे। वो सर्दियों का दिन था। वहां गुरुजी से मिलने एक आदमी आया। वो गुरुजी से मदद मांग रहा था। गुरुजी ने उससे कहा कि शिवरात्रि के बाद आना। उस आदमी ने कहा, "तब तक तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा, मेरा बेड़ा गर्क हो जाएगा।" गुरुदेव ने कहा, "मैं शिवरात्रि तक यहां नहीं हूं।" उन्होंने मुझे बुलाया, मैं वहां गया। एक बार सुल्तानपुर रोड पर रहमान खेड़ा नाम की एक जगह पर कैंप लगा था। उस रात हम वहां जाकर रुके थे। हम लोग ऐसे ही बैठकर बातें कर रहे थे, तभी श्रीवास्तव जी ने गुरुजी से पूछा, "गुरुजी, आपने उस आदमी का काम कर दिया?" गुरुजी ने कहा, "हां, मैंने कर दिया।" श्रीवास्तव जी ने पूछा, "क्या उस आदमी को यह पता है?" गुरुजी ने कहा, "नहीं।" जिसका भी काम करना होता था या गुरुदेव जिस आदमी की मदद कर रहे होते थे, तो गुरुदेव कभी उन्हें यह एहसास नहीं होने देते थे कि उन्होंने उनका काम किया है।

गुरुदेव के कहे इन शब्दों को समझना आसान नहीं है कि "मैं अभी तुम्हारी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैं अभी यहां मौजूद ही नहीं हूं।" दरअसल, उनका मतलब यह था कि उनका शिव-रूप दिवाली और शिवरात्रि के बीच निष्क्रिय था। उनके इसी रूप ने ये शब्द कहे थे, "चूंकि मैं यहां नहीं हूं तो मैं शिवरात्रि के बाद ही तुम्हारी मदद कर पाऊंगा।"

जब ज्यादातर लोग गुरुदेव से बड़ा गुरुवार पर मिलते थे, तो वो कुछ ही सेकंड के लिए किसी से मिल पाते थे, क्योंकि वो एक के बाद एक लगातार सबको आशीर्वाद देते रहते थे। बहुत-से लोग इस सोच में पड़ गए कि आखिर गुरुदेव इन सबका इलाज कैसे कर लेते हैं जबकि उन्हें यह तक नहीं पता था कि उनकी समस्या क्या है? स्वाभाविक है कि बातचीत के अभाव में बहुत-से लोग

उनकी शक्तियों के बारे में बस अटकलें लगाते रहते थे। लेकिन फिर भी उनके पास आने वाले **60** से **80%** या इससे ज्यादा लोग कुछ ही दिनों में आंशिक रूप से या पूरी तरह ठीक हो जाते थे। बाकी लोगों को पूरी तरह ठीक करने से पहले गुरुदेव कई बार उन्हें स्थान पर बुलाते थे।

जो लोग उन्हें आजमाने के लिए वहां आते थे, उन्हें आराम नहीं मिलता था। ना ही उन लोगों को, जिनमें बहुत अहंकार होता था।

जो लोग अतीत में उनके शिष्य थे या भविष्य में उनके शिष्य बनने वाले थे, उन्हें चमत्कारिक नतीजे मिलते थे। वे तुरंत ही गुरुदेव के आगे नतमस्तक हो जाते थे। गुरुदेव जानते थे कि शिष्यों की नियुक्ति करने में समय गंवाना व्यर्थ है इसलिए वे झटपट उन्हें नियुक्त कर लेते थे। उनके शिष्यों का प्रशिक्षण बहुत छोटा होता था, लेकिन उन पर जिम्मेदारियां बहुत बड़ी होती थीं।

गुरुदेव के द्वारा नियुक्त किए गए ऐसे ही एक शिष्य हैं पूरण जी, जो मेरी इस राय से सहमति रखते हैं,

सवाल : ऐसा क्या था, जो आपको उनकी ओर ले गया?

पूरण जी : उनकी सादगी, उनका पहनावा, जिसमें किसी तरह का कोई दिखावा नहीं था।

सवाल : तो आपको ऐसा क्यों लगा कि जिस आदमी का पहनावा सादगी भरा है, उनमें कुछ आध्यात्मिक खासियत होगी? ऐसे तो लाखों लोग हैं, जो सादगी भरा पहनावा अपनाते हैं?

पूरण जी : जी नहीं, उनके जैसे नहीं।

सवाल : उनके जैसे नहीं मतलब?

पूरण जी : उनके जैसे नहीं मतलब उनकी सादगी ऐसी थी कि वो कभी यह दिखावा नहीं करते थे कि वो क्या हैं। वो कभी नहीं कहते थे कि मैं इतना बड़ा व्यक्ति हूं और कभी बढ़-चढ़कर बातें नहीं करते थे। वो तो बस इतना कहते थे कि मैं तुम्हारा वकील हूं, जो भगवान के सामने

तुम्हारा मुकदमा लड़ रहा है। तो तुम सिर्फ यह प्रार्थना करो कि मैं तुम्हारे लिए जीत जाऊं। बस इतना ही कहते थे।

गुरुदेव भक्ति के प्रति समर्पित थे और वे छोटी से छोटी भावना और भक्ति को खूब समझते थे।

बाथरी में एक कैंप के दौरान मैंने झाड़ियों में एक बड़ा अनोखा सफेद रंग का फूल देखा और मैंने इसे गुरुदेव को भेंट करने का फैसला किया। हालांकि इस फूल को तोड़ने के लिए मुझे कुछ चट्टाने चढ़ने की जरूरत पड़ी। मैंने डरते हुए ऐसा किया और फिर जब गुरुदेव पाठ कर रहे थे, तो मैंने इस फूल को गुरुदेव के चरणों में रख दिया और चुपचाप कमरे से चला गया क्योंकि मैं इस बात का कोई दिखावा नहीं करना चाहता था। कुछ घंटों बाद उन्होंने मेरे बारे में पूछा। जब मैं उनके कमरे में पहुंचा तो वे हाथों में वही फूल लिए उसकी सुगंध ले रहे थे। उन्होंने कहा, "यह बड़ा प्यारा फूल है।" वो जान गए कि मैं जानता हूं कि वो क्या जान गए हैं! तो ऐसे में कहने के लिए कुछ भी बाकी नहीं था।

ज़रा अतुल अजनबी के इस शेर पर गौर फरमाइए

अजब ख़ुलूस अजब सादगी से करता है
अजब ख़ुलूस अजब सादगी से करता है
दरख़्त नेकी बड़ी खामोशी से करता है

कुछ ऐसा ही वाक़या प्रधान जी के साथ भी हुआ था, जिसे बिट्टू जी कुछ यूं बयां करते हैं,

बिट्टू जी : प्रधान जी हिमाचल के आंतरिक इलाके में रहते थे। जब वो मिलिट्री से रिटायर हुए, तो वो गुरुजी की शरण में आए। गुरुजी को मक्के की रोटी बहुत पसंद थी। और हिमाचल में एक पहाड़ी चक्की होती थी, जिसे ग्राठ कहते हैं, जो पानी से चलती थी। वो गुरुजी के लिए इसे पिसवाकर लाते थे। यह 1979-80 की बात थी। उन दिनों में ट्रांसपोर्ट का कोई साधन नहीं हुआ करता था। और सबसे खास बात यह थी कि वो नंगे पांव चलकर आते थे। वो अपने कंधों पर बैग रखकर 15-20 किलोमीटर दूर बस स्टॉप पर आते थे। वहां से वो बस लेकर कांगड़ा जाते थे क्योंकि उनका गांव पालमपुर के पास था। कांगड़ा से वो चंडीगढ़ के लिए बस बदलते थे। वहां से दिल्ली और दिल्ली से गुड़गांव आते थे। वो कभी आटे की बोरी जमीन पर नहीं रखते थे। जब

वो खड़े रहते तो इसे अपने सिर पर रखते थे और जब बैठे होते थे तो इसे अपनी गोद में रख लेते थे क्योंकि वो इसे गुरुजी के लिए ले जा रहे होते थे। एक बार गुरुजी ने उन्हें 100 रुपए दिए और कहा, "पुत्तर, मैं यह आटे की कीमत नहीं दे रहा हूं जो तुमने मेरे लिए खरीदा है, क्योंकि यह तो अनमोल है। मैं सारी जिंदगी इसकी कीमत नहीं चुका सकता और यह तो मुझ पर एक क़र्ज़ है। मैं तुम्हें तुम्हारी बरकत के लिए **100** रुपए दे रहा हूं। यह आटा तो मुझ पर एक उधार है।"

गुरुदेव को इस बात को लेकर सचेत रहना पड़ता था कि वे खुद उनकी और दूसरी शक्तियों की सतत निगरानी में थे। वो किसी भी तरह से कमजोर, भावुक और मोहमाया में लिप्त नहीं दिख सकते थे। उनके लिए यह जरूरी था कि वो एक ऐसे शख्स के रूप में नजर आएं, जिन्होंने भूमिकाएं निभाने की कला में महारत हासिल कर ली हो। मैं सोचता हूं कि वो अपनी राह में आने वाले इम्तेहानों से अच्छी तरह वाकिफ थे और इसलिए वे कामयाब होने के लिए हर इम्तेहान से गुजरते थे। इसके चलते कई बार वो इस तरह से पेश आते थे, जिसकी अक्सर उम्मीद नहीं होती थी।

अगला अध्याय मेरी इस बात को साबित कर देगा। आइए गिरी जी के पास चलते हैं!

गिरी जी : एक बार मैं गुड़गांव में ठहरा हुआ था। सुबह लगभग **3** बजे गुरुजी लुंगी और कमीज पहनकर उस कमरे में आए और उन्होंने मुझे आवाज़ देकर जगाया। उन्होंने कहा, "गिरिया, बेटा जा नहा ले। हमें बाहर जाना है।" वो मुझे सोनीपत ले गए। उस समय गुरुजी की दोनों बेटियों, उनके भतीजे और उनके भतीजे की पत्नी का एक्सीडेंट हो गया था। माताजी और उनकी दोनों बेटियां संतलाल जी के यहां थीं। हम उनके पास गए तो देखा कि उनकी बड़ी बेटी रेणु की पसलियां टूट गई थीं और छोटी बेटी ईला का कंधा टूट गया था। गुरुजी ने उनसे कहा, "क्या, तुम एक गुरु की बेटी होकर डरते हो, क्यो रोती हो? सब ठीक हो जाएगा" संतलाल जी ने गुरुजी से कहा, "गुरुजी, आप बैठ जाइए। मैं आप सभी को चाय पिलाता हूं।" गुरूजी ने चाय पीने से इंकार कर दिया। माताजी के आंसू छलक रहे थे। उन्हें देखकर गुरुजी ने कहा, "मास्टर, चिंता मत करो, वे ठीक हो जाएंगे।" उसके बाद हम बाहर आए और उन्होंने मुझे कार में बैठकर ड्राइव करने को कहा। वो मुझे किसी ऐसी जगह पर ले गए, जो एक छोटी और भीड़भाड़ वाली जगह थी। वहां चॉलें थीं जैसा कि हम मुंबई में देखते हैं। वो मुझे किसी के घर ले गए। यह राम निवास का घर था, जो एक मिस्त्री था और स्थान पर सेवा करता था। वो मुझे अपने घर पर ले

गया। यह लगभग 200 वर्ग फुट का एक छोटा-सा कमरा था। वहां सबकुछ था - किचन, वॉशरूम, बेडरूम, ड्राइंग रूम। वे निम्न मध्यवर्गीय लोग थे। गुरुजी अपने कमरे में दाखिल हुए। गुरुजी जाकर लकड़ी की कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने इस बात को नजरअंदाज़ कर दिया कि वहां कितना गंदा था या सबकुछ कितनी जर्जर स्थिति में था। आप जानते हैं उन्होंने वहां इतना आनंद लिया कि उन्हें संतलाल जी के यहां भी उतना मज़ा नहीं आया। उन लोगों ने गुरुजी से पूछा कि क्या वो चाय पीना चाहेंगे, लेकिन गुरुजी ने मना कर दिया और उनसे चाय की पत्ती और चीनी लाने को कहा। फिर गुरुजी ने मेरे हाथ में चाय पत्ती और चीनी दी और इसे खाने के लिए कहा। मैंने वैसा ही किया। गुरुजी ने भी वही, किया। फिर गुरुजी ने आधा गिलास पानी (जल) मांगा और हम दोनों ने पानी पिया। गुरुजी ने कहा, "देखो चाय पी ली ना, हो गई अब चाय? क्या अब हम जा सकते हैं?" इस पर हम सब हंस पड़े।

वाह! क्या खूब!

इस बात पर तो ताज अहमद ताज का ये शेर याद आता है,

ख़ूब आराइशें भी हैं लेकिन
ख़ूब आराइशें भी हैं लेकिन
सादगी सादगी है क्या कहिए

आइए चलते हैं अगले पन्ने की ओर...

गुरुदेव जानते थे कि उनकी सर्वव्यापी प्रकृति का लाभ उठाने के लिए लोगों को उनके वर्तमान जीवन की छवि का इस्तेमाल करना होता था। उन्हें गुरुदेव से बात करने, उनकी पूजा करने और उनसे मन से जुड़ने के लिए उनकी तस्वीर की जरूरत थी। लोग भी दुनिया को नजर आने वाले उनके रूप के भंवर में फंस गए। वे गुरुदेव को उनके शारीरिक रूप से पहचानते थे न कि उनके अंतर्मन से! हालांकि गुरुदेव की सोच तो इन सबसे अलग थी। वो कभी बाहरी दिखावे में नहीं पड़ते थे। वो नहीं चाहते थे कि लोग उन्हें भगवान मानें और उन्हें लोगों से इतना ध्यान या महत्व मिले।

आइए लौटते हैं एफसी शर्मा जी के पास,

सवाल : मुझे गुरुदेव की हर बात बहुत अच्छी लगती है, लेकिन एक बात जो मुझे ज्यादा पसंद है, वो यह कि वो प्रचार-प्रसार से दूर रहते थे। क्या गुरुदेव ने कभी आपको बताया कि वो प्रचार से क्यों बचते थे? क्या आप कुछ उदाहरणों से इसे समझा सकते हैं?

एफ सी शर्मा जी : पब्लिसिटी या फोटोज़, जब भी कोई उनकी तस्वीर खींचता था, तो उन्होंने कभी अपनी तस्वीर नहीं खींचने दी। यदि कोई उनकी तस्वीर खींचता भी था, चाहे वो कैनन का ही कैमरा क्यों ना हो, तो डेवलप करने के बाद वो तस्वीर एकदम कोरी हो जाती थी। वो तो कहते थे, "खींच लो।"

गुरुदेव मानते थे कि प्रचार आपको ऊपर ले जाता है और फिर धीरे-धीरे नीचे ले आता है और आप यह बात अच्छी तरह जानते हैं क्योंकि आप भी उसी लाइन से हैं। और फिर हम एक गलती करते हैं, तो उसका भी प्रचार-प्रसार हो जाता है। लोग जिस आदमी को अपना भगवान मानते हैं, वो भगवान रहता ही नहीं है, भले ही उसका कोई कसूर ना हो। कसूर तो उन लोगों का होता है, जो अपने काम के लिए आते हैं और अपना काम करवा लेते हैं। इसीलिए गुरुदेव कभी पब्लिसिटी नहीं चाहते थे। कभी लोग उनसे कहते थे, "गुरुदेव आज तो बहुत कम लोग आए हैं।" तो गुरुदेव का जवाब होता था, "तो क्या? क्या तुम चाहते हो कि मैं सबको बुलाऊं? यह मेरा काम नहीं है। जिन लोगों को मेरे पास आना है, वो अपनी मर्जी से आएंगे।"

मुझे वो वक्त याद आता है, जब गुरुदेव ने मुंबई में मेरे अपार्टमेंट में मुझसे जबर्दस्ती स्थान शुरू करवाया था। ये मुझे बड़ा अजीब लगा था क्योंकि मैं वीर जी के द्वारा चलाए जा रहे स्थान पर सेवा करके खुश था। लेकिन गुरुदेव ने ज़िद की। मुझे उनके आदेश का पालन करना आता था। मैंने वैसा ही किया, जैसा गुरुदेव ने मुझसे कहा था। मैंने किसी को भी नए स्थान की शुरुआत के बारे में कुछ नहीं बताया और खुद ही स्थापना कर ली। उस वक्त सिर्फ मैं ही वहां मौजूद था, क्योंकि मैं अकेला ऐसा इंसान था, जो इस स्थान के बारे में जानता था।

लेकिन वो कहते हैं ना, गुलाबों की खुशबू भला गमलों तक कैसे सिमटी रह सकती है! इससे पहले कि मुझे पता चलता, न जाने कहां से दो परिवार स्थान पर आ पहुंचे। जब उन्हें मैं वीर जी के स्थान पर नहीं मिला, तो उन्होंने हर संभव जगह पर मुझे ढूंढा। और फिर मैं उन्हें एक नए स्थान पर मिला। वो उन बहुत-से लोगों में पहले थे, जिन्हें मदद मिली और जिनका उपचार

हुआ! बहुत जल्द यह बात फैल गई और इसके बाद आलम यह था कि हम दिन में लगभग 12 घंटे तक स्थान पर व्यस्त रहते थे।

आगे चलकर जब वीर जी का देहांत हुआ, तो दोनों स्थानों को एक करके हमारी जगह पर ही स्थापित कर दिया गया। मुझे लगता है कि गुरुदेव ने पहले ही यह सबकुछ देख लिया था!

गुरुदेव मानते थे कि प्रचार से दूर रहना ही लोगों के ध्यान से दूर रहने का एकमात्र तरीका है। उनका उद्देश्य सेवा थी न कि अपना प्रचार करना! मुझे याद है कि एक शिवरात्रि पर कुछ भक्तों ने स्थान के बाहर टीवी स्क्रीन्स लगा रखी थी, जहां लंबी क़तारों में लोग इंतजार कर रहे थे।

जब गुरुदेव क़तार में खड़े लोगों को आशीर्वाद देने पहुंचे, तो उनका ध्यान टीवी स्क्रीन पर गया। वो इससे खुश नहीं लग रहे थे। मैं तुरंत भांप गया। मुझे लगता है कि उन्होंने खुद को कोसते हुए यह कहा था, "तो अब तुम अपना प्रचार करने की कोशिश कर रहे हो?! लो मैं दिखाता हूं। मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा।" या शायद ऐसा ही कुछ उन्होंने सोचा होगा।

आइए, अब पहलवान जी को सुनते हैं,

पहलवान जी : वो अपना रूप बदल लेते थे और लोग उन्हें पहचान नहीं पाते थे। वो कहते थे कि लोग बैठे हैं और तुमने चाय पानी के लिए भी नहीं पूछा। कहने का मतलब यह है कि अमीर लोगों को महत्व देने का यह गुरुजी का तरीका बिल्कुल नहीं था। गुरुजी कभी अमीर-गरीब में फर्क नहीं करते थे और किसी तरह के प्रचार में भी उनकी दिलचस्पी नहीं थी। एक बार 1980 में कुछ लोगों ने एक पैंपलेट छपवाया था, जिस पर लिखा था "गुरुजी - द ओनली फैक्ट।" तो उनकी कार गेट के पास खड़ी थी। उन दिनों मेरी ड्यूटी रोड पर लगी थी। वो लोग कारों पर पैंपलेट लगा रहे थे और मैंने उनसे कह रखा था कि आप चाहे जिसे यह पैंपलेट बांटें, लेकिन इस कार पर नहीं लगाना। उनके ग्रुप के किसी आदमी ने अपने रिंग लीडर से इसकी शिकायत कर दी। वो रिंग लीडर आया और उसने देखा कि लाल गाड़ी पर पैंपलेट नहीं लगा है। उसने मुझे यहां-वहां ढूंढा, क्योंकि मैंने इसे कार पर चिपकाने से मना किया था। फिर वो मेरे पास आया और बोला, "भैया, आप इस लाल गाड़ी पर क्यों नहीं लगाने दे रहे हैं, जबकि इसमें तो गुरुजी बैठते हैं?" मैंने जवाब दिया, "हां, गुरुजी इस कार में बैठते हैं। महीने में कम से कम 25-30 बार

तो बैठते ही हैं। लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप इस पर पैंपलेट लगाएं क्योंकि मुझे गुस्सा आता है। मैं नहीं जानता क्यों लेकिन आप इस पर मत लगाओ।" उन्होंने मेरी बात मानी। अगले दिन जब मैं गुरुजी के साथ गाड़ी में उनके फार्म से लौट रहा था, तो मैंने उनसे कहा, "गुरुजी कल मेरे साथ एक वाकया हुआ, मुझे नहीं पता कि मैंने ठीक किया या नहीं, पर मैं समझ नहीं पा रहा हूं। उन्होंने पूछा, "ऐसा क्या है, जो पहलवान तय नहीं कर पा रहा है।" मैंने कहा, "कुछ आदमी आए थे, जो इस गाड़ी पर पैंपलेट लगाना चाहते थे, लेकिन मैंने उन्हें मना कर दिया।" गुरुदेव ने कहा, "पुत्तर, मुझे भी इस तरह का प्रचार पसंद नहीं है।"

पूरण जी भी पहलवान जी की तरह ही भावनाएं रखते हैं,

पूरण जी : वो अपनी जिंदगी में बड़े विनम्र इंसान थे। उनका स्वभाव बहुत ही विनम्र था। वो सभी से बड़ी विनम्रता से पेश आते थे। वो कहते थे, "आ बेटा" और लोगों को लगता था कि गुरुजी सिर्फ उनके ही हैं और किसी के नहीं। वो इस तरह का एहसास सबको कराते थे, आपको, मुझको और सभी को।

सवाल : लोग कहते हैं कि जो भी उनकी तस्वीर लेना चाहता था, उन्हें उनकी अनुमति के बाद ही ऐसा करना होता था। क्या आप इस जादू के बारे में कुछ बताना चाहेंगे?

पूरण जी : हां, तस्वीरों के लिए तो उनकी अनुमति लेनी पड़ती थी। मैंने भी उनकी फोटो लेने की कोशिश की, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला।

सवाल : फिर?

पूरण जी : फिर मैंने उनसे रिक्वेस्ट की और एक तस्वीर ले ली। मैंने तस्वीर खींची भी, लेकिन कैमरा का शटर ही खराब हो गया था।

जैन साहब जूनियर जम्मू में स्थान चलाते हैं और वो भी कैमरे की इस आंख मिचौली के भुक्तभोगी थे।

सवाल : जैन साहब आपने एक किस्सा बताया था, जो आपके कैमरा के साथ हुआ था?

जैन साहब : कैमरा को लेकर तो बहुत-सी छोटी-छोटी घटनाएं हुई थीं।

सवाल : कैमरा वाला वाकया मैं रिकॉर्ड करना चाहता हूं क्योंकि मैंने कम से कम 20 लोगों को एक ही बात कहते हुए सुना था। मैं जानता हूं क्योंकि मेरा कैमरा भी खराब हो जाता था (हंसते हुए)। कैमरा तो छोड़िए, उन्होंने एक बार मेरा पूरा रोल ही खराब कर दिया था। पूरा रोल खाली था।

जैन साहब : एक बार मैं गुड़गांव में गुरुजी की फोटो खींचना चाहता था और उनसे पूछा कि क्या मैं ऐसा कर सकता हूं। वो मान गए और बोले, "ले खींच ले।" उन्होंने फोटो के लिए पोज़ भी दिया, लेकिन मेरा कैमरा चालू ही नहीं हो रहा था। मैंने कई बार कोशिश की, लेकिन सब बेकार था। जब मैं बाहर आया, तो कैमरा काम करने लगा। मैं समझ गया कि गुरुजी की इच्छा ही नहीं है फोटो खिंचवाने की। तो फिर मैंने कभी पूछा ही नहीं।

जिगर मुरादाबादी ने भी क्या खूब कहा है

सभी अंदाज़-ए-हुस्न प्यारे हैं
हम मगर सादगी के मारे हैं

कोडक, निकॉन और तमाम कैमरा निर्माता तो यह देखकर चकरा ही गए होते कि उनके बनाए हुए प्रोडक्ट्स बस किसी की मर्जी के आगे घुटने टेक देते हैं।

गुरुदेव की यह कैमरा ट्रिक बड़ी आम थी। वैसे, मैं भी इसका शिकार हुआ था और मेरी तरह श्री कृष्णा जी और बाकी बहुत-से लोग भी इस कैमरे के फेर में घनचक्कर बन गए थे। बख़्शी जी भी हमारी इसी मंडली के सदस्य थे, जिन्हें ऐन मौके पर उनके कैमरा ने धोखा दे दिया था।

उनसे चर्चा करने के लिए आइए शिमला चलते हैं,

सवाल : मैंने सुना है कि यदि कोई उनकी परमिशन के बिना उनकी तस्वीर खींचता था, तो वो तस्वीर कैमरा रोल में आती ही नहीं थी। क्या आपने कभी ऐसा कुछ देखा है?

बक्शी जी : यह तो ऐसा ही था। मुझे उनका तो पता नहीं, लेकिन मैं उनका अंश हूं। शिमला में लोगों ने लाख कोशिश कर ली मेरी तस्वीरें लेने की। कैमरा खराब हो गए लेकिन तस्वीर नहीं निकली।

सवाल : आपने कहा था कि गुरुदेव हम में से एक हैं। इसका क्या मतलब है?

बक्शी जी : इसका मतलब यह है कि उन्होंने हमें अपने जैसा बना लिया था और वो इस बात का ख्याल रखते थे कि हम उनके जैसे बनें। गुरुदेव ने कभी हमें यह महसूस नहीं होने दिया कि वो हमसे बहुत बड़े थे। वो हम सभी के साथ बैठकर खाना खाते थे।

मुंबई के एक नौजवान पुलिसकर्मी उद्धव कीर्तिकर वही बात दोहराते हैं, जो गुरुदेव ने उनसे कही थी। वो यह कि "मुझे लोगों की वाहवाही नहीं चाहिए और मुझे प्रचार भी पसंद नहीं।"

गुड़गांव के चार मसखरों में से एक थे निक्कू, जो माताजी के भतीजे थे। गुरुदेव ने तो जैसे निक्कू को लुधियाना में उनके घर से अगुवा ही कर लिया था। इसके लिए निक्कू जी के पिता ने भी सहमति दे दी थी। इस तरह एक मसखरे का जन्म हुआ!

निक्कू स्थान पर कार्यक्रम आयोजित करने में बड़ी भूमिका निभाते थे और गुरुदेव भी उन्हें बहुत पसंद करते थे।

सवाल : आप गुरुदेव के घर में उनके साथ 10 साल रहे थे। आपने उनसे क्या सीखा?

निक्कू जी : मैंने उनके बारे में एक बात बड़ी बारीकी से गौर की है कि वो बहुत ख्याल रखने वाले इंसान थे। और एक ऐसे गुरुजी होने के नाते, जहां पूरी दुनिया उनके सामने सिर झुकाती थी, वो हमेशा अपने से बड़ों का बहुत आदर करते थे। उनके चचेरे बड़े भाई किशन जी होशियारपुर से आने के बाद गांधीनगर में रहते थे और गुरुजी उनकी बहुत इज्जत करते थे। वो उन्हें अपने साथ पलंग पर बैठाते थे। वो मेरे पिताजी का भी बहुत सम्मान करते थे, क्योंकि वो गुरुजी से बड़े थे। कभी-कभी गुरुजी अपनी सिगरेट छुपा लेते थे ताकि मेरे पिता उन्हें देख ना

सके। वो मेरे पिताजी को पाजी कहते थे। पंजाब में हम बड़े भाई को पाजी कहते हैं। वो कहते थे, "पाजी को पता नहीं चलना चाहिए कि मैं सिगरेट पी रहा हूं।"

सवाल : छुपे रुस्तम ?

निक्कू जी : वो उन्हें अपने साथ बैठा लेते थे और उनकी इज्जत करते थे। आपने तो यह देखा होगा?

सवाल : हां

निक्कू जी : हमें उनसे एक बड़ा खास सबक सीखने को मिला। वो यह कि वो किस तरह अपने रिश्ते निभाते थे। वो एक गुरु और भगवान थे। वो लोगों को यह संदेश देते थे कि भले ही वो गुरु हैं, लेकिन वो हैं तो एक इंसान, और एक इंसान होने के नाते वो अपने हर रिश्ते निभाते थे।

निक्कू जी के पिता मिस्टर रूद्र अपने बहनोई यानी कि गुरुदेव को बहुत चाहते थे, लेकिन उन्हें गुरुदेव की आध्यात्मिक शक्तियों के बारे में कुछ नहीं पता था। इससे साबित होता है कि किस तरह गुरुदेव अपनी आध्यात्मिक सच्चाई छिपाकर रखते थे।

अधिकांश लोगों को तो अपनी खूबियों पर ध्यान आकर्षित करने की दरकार होती है। खास तौर पर वो अपने करीबी लोगों से दाद चाहते हैं और उनकी मान्यता पाने की हसरत रखते हैं। लेकिन दूसरी तरफ, हमारे गुरुदेव थे, जो लोगों के ध्यान से पूरी तरह दूरी बनाए रखते थे और एक ही शरीर में रहकर अलग-अलग ज़िंदगी जीते थे।

मिस्टर रूद्र याद करते हैं।

रूद्र साहब : मैं अपनी पूरी ज़िंदगी में जब भी उनसे मिला, मेरे लिए तो वो एक आम इंसान थे। राजपाल जी, जो दिल्ली में रहते हैं, आप उनसे मिले होंगे।

सवाल : हां, कई बार। हज़ारों बार!

रूद्र साहब : राजपाल जी ने मुझसे कहा था, "मामा जी आप गुरुदेव के बारे में कुछ जानते हैं?" मैंने कहा, "राजपाल जी, वो मेरे बहनोई हैं। इसके अलावा मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानता और ना मैंने उनके कोई करिश्मे देखे हैं।" गुरुदेव कभी अपने उन करिश्मों के बारे में बढ़ाई नहीं करते थे, जो उन्होंने किए थे। कभी-कभी गुरुजी हमारे साथ लुधियाना में आकर रहते थे। हमारे घर में भी रहते थे, उन्होंने मुझे अपना बड़ा भाई माना था। तो यदि मैं उनसे कहता था, "राजिंदर यह नहीं करना है! उसे रहने दो।" तो वो मेरा सम्मान करते थे और कहते थे, "पाजी ने कहा है नहीं करना है।" गुरुजी जिस तरह से मेरी इज्जत करते थे, उतनी मुझे आज तक किसी से नहीं मिली।

गुरुदेव की अलौकिक प्रकृति को देखते हुए हम कह सकते हैं कि गुरुदेव चाहते तो काफी ऊंचे स्थान पर बैठकर खुद को महान दिखा सकते थे, एक वीआईपी की तरह बर्ताव कर सकते थे और अपनी सेवा में एक पलटन खड़ी कर सकते थे।

लेकिन, उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं जताया कि वो आध्यात्म के शाही-वारिस हैं।

इंसानियत और राज़दारी उनके व्यवहार की दो बड़ी खूबियां थीं। क्योंकि सच्ची महानता तो खुद अपनी पहचान बना लेती है। ऐसी महानता को स्वयं को किसी के सामने साबित करने की कोई दरकार नहीं होती। उन्होंने इंसानियत का कोई अभ्यास नहीं किया था। यह तो बस उनमें स्वाभाविक तौर पर थी।

गुरुदेव एक आम इंसान से हमदर्दी रखते थे, लेकिन उन्होंने कभी अपनी महानता का दिखावा नहीं किया। उन्हें इस बात का एहसास था कि उनके शिष्यों में संभवतः उनके जैसी समझ और गहराई नहीं थी। उन्होंने तो हमें बच्चों की तरह सिखाया। उन्होंने हमारी कमियों को अपनाया और हमारी दिव्यता की चिंगारी को हवा दी।

तो इन चार मसखरों में से दो, यानी कि पप्पू जी और निक्कू जी आगे बताते हैं,

पप्पू जी : हम लोग सिख परिवार से हैं। मेरी मम्मी और पापा, 'दारजी' थे, हम लोग अपने पापा को दारजी बोलते हैं। मेरे पैरेंट्स हमेशा गुरुदेव का बनाया हुआ जल लेते थे। तो जब भी वो गुरुजी से मिलने जाते थे, तो गुरुदेव को पता था कि हम सिख परिवार से हैं और वो अपनी

सिगरेट और तंबाकू छुपा लेते थे, क्योंकि इसकी इजाजत नहीं होती है। इसके बाद ही वो मेरे पैरेंट्स से मिलते थे। वो इस बात का इतना ख्याल रखते थे।

निक्कू जी : हां बिल्कुल। गुरुदेव हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे।

पप्पू जी : हां, वो इस बात का बहुत ज्यादा ध्यान रखते थे।

गुरुदेव सिख गुरुओं, खासतौर पर गुरु नानक देव और गुरु गोविंद सिंह जी के प्रति पूर्वाग्रह रखते थे। गुरु नानक देव उनके आध्यात्मिक सहयोगी थे, जिनसे गुरुदेव अपने सूक्ष्म शरीर में नियमित तौर पर मिलते थे।

जब आपको इस दिव्य सत्य का एहसास होता है, तो आप हर धर्म में एक समानता देख सकते हैं। आपको यह एहसास भी होता है कि हर धर्म के पीछे जो संत और पैगंबर हैं, वो एक ही बगिया के अलग-अलग फूल हैं। एक सधा हुआ अध्यात्मिक खिलाड़ी इस बात को पहचान लेता है। और गुरुदेव ने भी ऐसा ही किया।

हर धर्म में गुरुदेव के अनुयायी थे, लेकिन गुरुदेव ने कभी उनकी मान्यता को बदलने की कोशिश नहीं की। गुरुदेव के लिए तो सभी आध्यात्मिक संत एक परिवार की तरह थे और वे सभी के साथ समान व्यवहार करते थे।

भृगु के अनुसार, देवों के वैद्य अश्विनी कुमारों ने लोगों का उपचार करने में गुरुदेव की सहायता की थी। सेवा के उनके मिशन में देवताओं ने उन्हें सहयोग दिया था। गुरुदेव शिव के शिष्य थे और उस शक्ति के स्वरूप भी थे, जिसकी आकृति उनके हाथों पर साफ नजर आती थी।

सच्ची महानता को कभी दिखावा करने की जरूरत नहीं पड़ती। मैंने गुरुदेव से यही बात सीखी है।

जिन लोगों ने उनके रिवाज़ों का पालन करना सीख लिया, उन्हें इस बात में बड़ी संतुष्टि मिली। और आपको भी कुछ ऐसा ही अनुभव होगा।

मैं अशोक साहिल के इन शब्दों के साथ अपनी बात ख़त्म करता हूं...

ठीक कहते हो नज़ाकत में नशा होता है
ठीक कहते हो नज़ाकत में नशा होता है
सादगी का भी मगर अपना मज़ा होता है
अपना मज़ा होता है